Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा आर्थिक विकास में योगदान एक समग्र विश्लेषण मालवा और निमाड़ क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. सुनिता तोतला* सपना सोनी**

* सह प्राध्यापक, श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी, स्कूल ऑफ कॉमर्स, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य प्रदेश के मालवा और निमाड़ क्षेत्र अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक संसाधनों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थानों का विकास न केवल शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है, बल्कि यह क्षेत्रीय और राज्य-स्तरीय आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज, जब वैश्वीकरण और डिजिटल युग के प्रभाव के कारण अर्थव्यवस्थाएं तेजी से बदल रही हैं, उच्च शिक्षण संस्थानों की भूमिका केवल शिक्षण तक सीमित नहीं रही, बल्कि वे आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में भी उभर रहे हैं। यह अध्ययन मालवा और निमाड़ क्षेत्र में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा आर्थिक विकास में किए गए योगदान का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है और उनके प्रभाव को गहराई से समझने का प्रयास करता है।

शब्द कुंजी – उच्च शिक्षा, आर्थिक विकास, शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यार्थी, शिक्षण संस्थाए।

प्रस्तावना – भारत दक्षिण एशिया में स्थित भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा देश है। भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। लेकिन शिक्षा की स्थिति अत्यंत चिंताजनक एवं बदहाल है एक और जहाँ प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा तक घोर व्यापारीकरण बड़ा हैं फलस्वरूप बड़े पैमाने पद प्रतिभाएं योग्य शिक्षा पाने से वंचित रह जाती हैं(Milton Walter.1976)

मध्यप्रदेश – म.प्र. भारत का एक राज्य हैं जिसकी राजधानी भोपाल हैं। म.प्र. 1 नवंबर 2000 तक क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य था, इस दिन मध्य प्रदेश राज्य से 14 जिले अलग कर छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना हुई। 2011 की जनगणना के अनुसार म.प्र. की साक्षरता 70.60% थी जसमें पुरुष साक्षरता 80.5% व महिला साक्षरता 60.0% थी।(http://www.census2011.co.in/)वर्ष 2017 के आकड़ों के मुताबिक राज्य में 114,418 प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय और 3851 उच्च विद्यालय व 4765 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है।

मालवा – मालवा महाकवि कालिदास की धरती हैं यहां की धरती हरी - भरी धन धान्य से भरपूर रही हैं। मालवा ज्वालामुखी के उदगार से बना पश्चिमी भारत का एक अंचल हैं । पश्चिमी भाग तथा राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग से गठित यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही एक स्वतंत्र राजनैतिक इकाई रहा हैं। मालवा के अधिकांश भाग का गठन जिस पठार के द्वारा हुआ हैं उसका नाम भी इसी अंचल के नाम से मालवा का पठार हैं यह वर्तमान में लगभग 47760 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फेला हुआ हैं तथा इसके अंतर्गत धार, झाबुआ, रतलाम, देवास, इंदौर, उज्जैन, आगर, मंदसौर, सिहौर, रायसेन, राजगढ़ तथा विदिशा आदि जिले आते हैं(https://hi.wikipedia.org/wiki)।

निमाड़ – निमाड़ मध्य प्रदेश के पश्चिमी ओर स्थित है। इसकी भौगोलिक सीमाओं में निमाड़ के एक तरफ विन्ध्य पर्वत और दूसरी तरफ सतपुड़ा हैं, जबकि मध्य में नर्मदा नदी है। पौराणिक काल में निमाड़ अनूप जनपद कहलाता था। बाद में इसे निमाड़ की संज्ञा दी गयी। फिर इसे पूर्वी और पश्चिमी निमाड़ के रूप में जाना जाने लगा। निमाड़ का जिले के रूप में गठन ब्रिटिशराज में नेरबुव डिवीजन में हुआ था जिस का प्रशासनिक मुख्यालय खण्डवा में था। निमाड़ अंचल में निम्न जिले आते है-बड़वानी, बुरहानपुर, खंडवा, खरगोन,। निमाड़ क्षेत्र में निम्न शहर आते है -बड़वाह, बड़वानी, बुरहानपुर, हरसूद,खंडवा,खरगोन, जूलवानिय, बमनाला, भीकनगावं, मूँदी, सनावद (https://hi.wikipedia.org/wiki)।

किसी देश के विकास के लिए मानवीय संसाधनों का विकास करना आवश्यक होता हैं। मानवीय संसाधनों के विकास की दृष्टि से उच्च शिक्षा का महत्वपुर्ण स्थान हैं। उच्च शिक्षा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तन का 1 शक्तिशाली माध्यम हैं। उच्च शिक्षा देश के आर्थिक विकास के जरिये जनसाधारण के जीवन की गुणवत्ता में योगदान देती हैं। एक सशक्त समाज तथा एक समर्थ व जीवंत अर्थव्यवस्था के निर्माण करने की दृष्टि से शिक्षा के व्यापक उद्देश्य और भूमिका को दरकिनार कर सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को बाजार शक्तियों के भरोसे छोड़ दिया हैं। इन नीतियों के फलस्वरुप देश में उपाधि प्राप्त बेरोजगारी की फौज खड़ी हो गई है, जो चिंताजनक हैं। किसी भी समाज अथवा राज्य की शिक्षा उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती हैं। शिक्षा के द्वारा सामाजिक, आर्थिक विकास होता हैं। शिक्षा सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक वातावरण तैयार करती है जिससे राष्ट्रीय विकास होता हैं (http://hindimedia.in)।

साहित्य का पुनरावलोकन

द कंट्रीब्यूशन ऑफ एजुकेशन टू इकोनोमिक ग्रोथ: इभिडेंस फ्रॉम नेपाल, यह शोध पत्र नेपाल के आर्थिक विकास में शिक्षा के योगदान की भूमिका

का अध्ययन करता है। इस शोध पत्र में यह प्रर्दशित किया गया है कि नेपाल के सकल घरेलू उत्पादन में तथा नेपाल के आर्थिक व सामजिक विकास में शिक्षा का काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस शोध पत्र का विश्लेषण आर्थिक विकास में शिक्षा के योगदान का समर्थन करता है। यह शोध पत्र का न्यूनतम वर्ग विधि के द्धारा प्राप्त विश्लेषण के आधार पर प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है, कि प्राथमिक, द्धितीयक, तृतीयक और उच्चतर स्तर पर शिक्षा और आर्थिक विकास में दीर्घकालीन सहसंबंध पाया जाता है। जोहांसन कंटीग्रेशन परीक्षण से प्राप्त परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा तथा आर्थिक विकास में गहरा संबंध है। इसका अर्थ होता है कि प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा नेपाल व एशिया की प्रति व्यक्ति वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में योगदान करती है। **(दहल व अन्य, 2016)।**

यह शोधपत्र उच्चतर शिक्षा संस्थानों के आर्थिक विकास पर एक तुलनात्मक अध्ययन के संबंध में प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से, विभिन्न उच्चतर शिक्षा संस्थानों के आर्थिक प्रदर्शन को तुलनात्मक रूप से विश्लेषण किया गया है और उनके बीच विभिन्न प्राथमिकताओं का मुकाबला किया गया है। इस अध्ययन के परिणामस्वरूप, भारत में उच्चतर शिक्षा संस्थानों के आर्थिक विकास में संस्थानों के प्रकार, स्थान, उपलब्ध संसाधनों, शिक्षा गुणवत्ता, अनुसंधान एवं नवाचार, और विपणन योजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस अध्ययन के माध्यम से, भारतीय उच्चतर शिक्षा संस्थानों के आर्थिक विकास में सुधार करने के लिए नीतियों और योजनाओं को सुझाव दिए जाते हैं **(पाटिल, और जोशी, 2016)।**

यह एक समीक्षा शोध है जो शिक्षा के आर्थिक विकास के प्रभाव पर आधारित है। साहित्यिक समीक्षा के आधार पर स्पष्ट है कि शिक्षा का आर्थिक विकास में योगदान सकारात्मक, नकारात्मक या कुछ नहीं हो सकता है। शिक्षा के आर्थिक विकास में योगदान का निर्धारण करने के तीन अलग-अलग तरीके हैं, (अं) लाभ मुआवजा विश्लेषण शिक्षा एक निवेश है जो उत्पादकता में सुधार करता है और मौद्रिक और गैर-मौद्रिक रिटर्न प्रदान करता है (ब) मानव संसाधन प्रवृत्ति शिक्षा के माध्यम से भविष्य की आवश्यकता वाले कर्मचारियों की पूर्ति हो सकती है जो आर्थिक विकास को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त हों और (स) शिक्षा और आर्थिक विकास विश्लेषण शिक्षा का आर्थिक विश्लेषण में महत्वपूर्ण गुणक होता है। देश के आर्थिक विकास पर शिक्षा के प्रभाव/योगदान पर अनुसंधान की कमी है। जो भी थोड़ी सी शिक्षा के प्रोजेक्ट इंडिया में उपलब्ध हैं, वे हमारे नीति निर्धारित करने वालों को शिक्षा क्षेत्र में निवेश करने के लिए प्रबुद्ध नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए, भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा के योगदान पर अनुसंधान की आवश्यकता है और हमारे नीति निर्माताओं को शिक्षा – प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा और शिक्षा अनुसंधान पर जनसाधारण व्यय को बढ़ाने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है **(Mitra. and Rout, 2018)।**

प्रस्तुत शोध लेख भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका से सम्बंधित है इसमें यह गया कि शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो शिक्षार्थी को नवोन्मेषक, शोधार्थी, प्रशिक्षक, कुशल व्यापारी, कुशल उत्पादक, कुशल श्रमिक तथा विवकेशील उपभोक्ता बनाती है। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा कुशल उत्पादक, कुशल उपभोक्ता आदि का निर्माण करती है तथा यह प्रभावी आर्थिक विकास को बढ़ावा प्रदान करती है **(रीना, 2018)।**

शोध की परिकल्पना

H(1): मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में सकारात्मक है।

शोध के उद्देश्य:

1) उच्च शिक्षण संस्थाए मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में किस प्रकार योगदान दे रही हैं ? आदि के विषय में महत्वपूर्ण तथ्यों से अवगत होना।

'शोध कार्य के अंतर्गत शोध हेतु, शोध क्षेत्र के रूप में 'मालवा एवं निमाड़' के निम्न जिलों व उनकी शासकीय शिक्षण संस्थाओं को लिया गया जिनका वर्णन निम्नानुसार है'

शोध कार्य हेतु **इंदौर जिले** जिले के निम्न शासकीय महाविद्यालयों को शोध क्षेत्र के रूप में लिया गया :-

तालिका क्रमांक 1: शोध कार्य हेतु चुने गए इंदौर जिले के शासकीय महाविद्यालय

क्र.	महाविद्यालय का नाम	स्थान	जिला
1	शासकीय होलकर (आदर्श, स्वशासी) विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर	इंदौर	इंदौर
2	महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्नात्कोत्तर कन्या महाविद्यालय किला भवन	इंदौर	इंदौर
3	श्री अटल बिहरी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय	इंदौर	इंदौर

(http://highereducation.mp.gov.in)

शोध कार्य हेतु **खंडवा जिले** के निम्न शासकीय महाविद्यालयों को शोध क्षेत्र के रूप में लिया गया –

तालिका क्रमांक 2: शोध कार्य हेतु चुने गए खंडवा जिले के शासकीय महाविद्यालयों

क्र.	महाविद्यालय का नाम	स्थान	जिला
1	शासकीय महाविद्यालय	हरसूद	खंडवा
2	श्री नीलकंठेश्वर स्नातकोत्तर शासकीय महाविद्यालय खंडवा	खंडवा	खंडवा
3	शासकीय कन्या महाविद्यालय	खंडवा	खंडवा

(http://highereducation.mp.gov.in)

शोध परिकल्पना का विश्लेषण एवं मूल्यांकन

शोध परिकल्पना का मूल्यांकन

प्रश्नावली की विश्वसनीयता तालिका

क्रमांक 3: Reliability Statistics

Cronbach's Alpha	N of Items
0.893	40

मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में उच्च शिक्षण संस्थानों की महती भूमिका का मूल्यांकन करने के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसके अन्तर्गत जनसांख्यिकी डाटा के अलावा 40 प्रश्नों को स्केल पर आधारित करके प्रश्नावली की विश्वसनीयता का आँकलन किया गया। प्रश्नावली की विश्वसनीयता का मान 0.893 अभिप्राय है 89.3 प्रतिशत प्रश्नावली विश्वसनीय है,जिसका सत्यापन क्रानवेक अल्फा द्धारा किया गया है, अत: परिणामस्वरूप प्रश्नावली के विश्लेषण को आगे बढ़ाया जा सकता है।

H(1): मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में सकारात्मक है।

तालिका क्रमांक 4 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

दोनों कारकों मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव एवं आर्थिक विकास के मध्य पियर्सन सहसंबंध परीक्षण करने पर 0.747 मान प्राप्त हुआ है, तथा सार्थकता मूल्य (p-value) का मान 0.000 जो स्तरीय मान 0.05 से कम है। अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों कारकों के मध्य पियर्सन मान व सार्थकता मूल्य (p-value) स्तर मान 0.05 से कम होने पर कारकों के मध्य मजबूत व सार्थक संबंध है। साथ ही मॉडल समरी में प्रतिगमन विश्लेषण का प्रयोग दोनों कारकों के मध्य सकारात्मक संबंध को ज्ञात करने हेतु किया गया है। मॉडल समरी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, लिनियर सहसंबंध गुणांक ठका मान 0.747 है, व आर. स्क्वेयर (0.557) है। अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों कारकों के मध्य संबंध है। आर.स्क्वेयर (गुणांक का निर्धारण) का मान 0.557 प्राप्त हुआ है, जो यह दर्शाता है कि मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभावके मापदण्ड पर 55.7% है। मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव एवं आर्थिक विकास के बीच संबंध को जानने के लिए 'अनोवा परीक्षण' का प्रयोग किया गया है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ऋका मान 627.26 है, जो सारणीमान 2.47 से अधिक है व सार्थकता मूल्य .000[a] है, जो स्तरीय मान 0.05 से कम है। अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि परिकल्पना **H(1): मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में सकारात्मक है सत्य सिद्ध होती है।**

तालिका क्रमांक 5: Coefficients[a]मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव एवं आर्थिक विकास

Model	Unstandardized Coefficients		Standardized Coefficients	T	Sig.
	B	Std. Error	Beta		
1(Constant)	3.74	.586		6.38	.000
मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा	.495	.020	.747	25.04	.000

a. Dependent Variable: **आर्थिक विकास**

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों चरों के मध्य Coefficients[a]ज्ञात किया गया है। मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास को निर्भर चर तथा मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा को स्वतंत्र चर माना गया है। इस अध्ययन हेतु सबसे पहले बीटा स्तर का प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात् टी टेस्ट (t) का उपयोग किया है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि t टेस्ट का मान 6.38 है, जो अधिक है। लिनियर समीकरण Y = 3.74 + .495X है, जो कि सकारात्मक रेखीय संबंध को इंगित करता है।

शोध निष्कर्ष – शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर, यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा लोगों को एक अवसर प्रदान करती है जिससे वे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मसलों पर सोच-विचार कर सकते हैं। इससे उन्हें समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए योजना बनाने और कार्रवाई करने की क्षमता मिलती है, जो आर्थिक सुधार और सामाजिक समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण है। उच्च शिक्षा और प्रौद्योगिकी क्षमता का ध्यान रखने से लोग अपने क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं, जिससे उन्हें विभिन्न रोजगार के विकल्पों में नौकरी प्राप्त करने का मौका मिलता है। शिक्षा से समृद्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति अधिक उच्च और अधिकतर वाणिज्यिक या औद्योगिक क्षेत्रों में सक्रिय हो सकते हैं, जिससे समृद्धि और विकास का सृजन हो सकता है। इस रूप में, शिक्षा को एक नौकरी की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण साधन माना जा सकता है जो समाज के अधिकांश को समृद्धि और सामाजिक सुरक्षा की दिशा में आगे बढ़ने में मदद कर सकता है (www.allresearchjournal.com)

मालवा और निमाड़ क्षेत्र में स्थापित उच्च शिक्षण संस्थानों ने न केवल युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई है, बल्कि रोजगार सृजन, शोध एवं विकास, और औद्योगिक विकास के माध्यम से क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी गति दी है। इन संस्थानों के माध्यम से स्थानीय उद्यमिता को बढ़ावा मिलता है, जिससे क्षेत्रीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग और उनके प्रभावी प्रबंधन की संभावना बनती है। यह अध्ययन मालवा और निमाड़ क्षेत्र में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा आर्थिक विकास में किए गए योगदान का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है और उनके प्रभाव को गहराई से समझने का प्रयास करता है (http://www.socialresearchfoundation.com)

शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान – प्रश्न उठता है कि वे कौन सी चुनौतियां हैं जिनका सामना करने की कवायद शिक्षक-शिक्षा को करनी है। इसका उत्तर देने के लिए शिक्षा के समक्ष जिन क्षेत्रों से चुनौतियां सामने आ रही हैं अथवा भविष्य में और तीव्र होकर सामने आने की आशंका है उन्हें तीन प्रमुख भागों में बांटा जा सकता है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग के अन्तर्गत आर्थिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली चुनौतियां हैं। आर्थिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली चुनौती के पश्चात सामाजिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली चुनौती पर चर्चा की जाए तो स्पष्ट होता है कि शिक्षक की वास्तविक कसौटी समाज है। यह कहने में कदापि संकोच नहीं होना चाहिए कि शिक्षक की सामाजिक प्रतिष्ठा को काफी आघात पहुंचा है जिसका जिम्मेदार वह स्वयं है। अपनी खोई प्रतिष्ठा को प्राप्त करना तभी संभव है जबकि शिक्षक द्वारा इसके लिए ईमानदारी से प्रयास किया जाय। किन प्रयासों, कार्यों, मूल्यों, मान्यताओं को छोड़ा जाय और किनसे जुड़ा जाये यह तय करने के लिए देश, काल और परिस्थिति के अनुसार बुद्धि, विवेक और ज्ञान का सहारा लेकर विमर्श करना आवश्यक है। अंतिम चुनौती भरा क्षेत्र राजनीतिक है। यद्यपि अपने देश में लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली प्रचलित है तथापि नीतिगत अस्पष्टता अथवा व्याख्या भिन्नता के कारण कभी-कभी कुछ व्यवधान आ जाते हैं। आंतरिक एवं बाह्य दबाव समूह भी निर्णयों को प्रभावित करते हैं। आंतरिक स्तर पर राजनैतिक दल तथा बाह्य स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं दबाव समूह का कार्य करती हैं जिससे नीतियों के निर्माण तथा उनके क्रियान्वयन पर प्रभाव पड़ता है (https://educationforallinindia.com)

उपसंहार – उच्च शिक्षण संस्थान केवल शिक्षा प्रदान करने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आर्थिक विकास के केंद्र बिंदु भी बन सकते हैं। शिक्षा किसी भी समाज के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की आधारशिला है। उच्च शिक्षण संस्थान, विशेषकर विश्वविद्यालय और तकनीकी संस्थान, न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करते हैं, बल्कि नवाचार, उद्यमिता, और सामाजिक सुधार के लिए मंच भी तैयार करते हैं। मध्य प्रदेश के मालवा और निमाड़ क्षेत्र, जो अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संपदा के साथ-साथ कृषि और औद्योगिक गतिविधियों के लिए जाने जाते हैं, इन क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थानों का प्रभाव दूरगामी है।

मालवा और निमाड़ क्षेत्र में स्थापित उच्च शिक्षण संस्थानों ने न केवल युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई है, बल्कि रोजगार सृजन, शोध एवं विकास, और औद्योगिक विकास के माध्यम से क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था

को भी गति दी है। यह अध्ययन मालवा और निमाड़ क्षेत्र में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा आर्थिक विकास में किए गए योगदान का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है और उनके प्रभाव को गहराई से समझने का प्रयास करता है।

शिक्षा में तकनीकी साधनों का सही उपयोग समृद्धि और विकास में वृद्धि का माध्यम बनता है। प्रौद्योगिकी के उपयोग से शिक्षा क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों का प्रयोग होता है, जिससे छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में जानकारी प्राप्त होती है। यह छात्रों को आधुनिक समय की मांगों के अनुसार तैयार करता है और उन्हें उच्चतम गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करता है। इससे वे अपने क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं, जो उन्हें नौकरी और अन्य अवसरों में सफलता की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करती है। साथ ही, शैक्षिक संसाधनों का उपयोग करके छात्रों को बुनियादी ढांचों और मूल सिद्धांतों की समझ प्राप्त होती है। यह उन्हें अच्छी अधिकारता और विचारशीलता प्रदान करता है, जिससे उनकी नौकरी और व्यापार में सफलता मिलती है। इस प्रकार, शैक्षिक संसाधनों का सही उपयोग करना आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक होता है जो समृद्धि और सामाजिक विकास में मदद करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. https://www.allresearchjournal.com/archives/2020/vol6issue2/PartE/6-11-146-542.pdf
2. http://www.census2011.co.in/census/state/madhya+pradesh.html
3. दहल गंगाधर व अन्य (2016), द कंट्रीब्यूशन ऑफ एजुकेशन टू इकोनोमोनिक ग्रोथ इभिडेंस फ्रॉम नेपाल, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाईड रिसर्च, वाल्यूम 4(1), पृष्ठ संख्या: 326-327)
4. hhttp://www.educationportal.mp.gov.in/Public/Schools/ssrs/State_School_Block.aspx?MP=1
5. hhttps://educationforallinindia.com/issues-challenges-indian-education-system-is-facing/
6. https://hi.wikipedia.org/wiki/मध्य_प्रदेश/शिक्षा
7. https://hi.wikipedia.org/wiki/मालवा/प्रमुख_स्थान_एवं_नगर
8. https://hi.wikipedia.org/wiki/निमाड़
9. https://highereducation.mp.gov.in/
10. hhttp://hindimedia.in/depending-on-the-quality-of-higher-education/?print=print
11. Mitra A. and Rout, H.S (2018) Education and Economic Development: A Review of Literature PRAGATI: Journal of Indian Economy. Volume 5, Issue 1, pp. 81-110)
12. Meyer, Milton Walter.(1976)." *A Short History of the Subcontinent". South Asia*. pages no. 1, ISBN 0-8226-0034-X)
13. पाटिल, अभय और जोशी, नीति. (2016). भारत में उच्चतर शिक्षा संस्थानों का आर्थिक विकास एक तुलनात्मक अध्ययन. अर्थविज्ञान और योजना, 19 (2), 65-82)
14. रीना (2018) ने शोध लेख भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडभांस एकेडेमिक स्टडीज, वाल्यूम-1 स्पेशल इश्यू, पेज संख्या: 305-398)
15. http://www.socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/6/161/1708190841091st%20ravindra%20modi.pdf

तालिका क्रमांक 4:Model Summary[b] मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव एवं आर्थिक विकास

Model	R	R Square	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate	Change Statistics					Durbin-Watson
					R Square Change	F Change	df1	df2	Sig. F Change	
1	.747a	.557	.557	3.39	.557	627.26	1	478	.000	2.12

a. Predictors: (Constant), **मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव**

b. Dependent Variable: **आर्थिक विकास**

****